This question paper contains 4 printed pages.

Your Roll No. ....

Sl. No. of Ques. Paper : 2981

Unique Paper Code : 12057503

Name of Paper : अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

Name of Course : B.A. (Hons.) : CBCS : DSE–I

Semester : V

Duration : 3 hours

Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. दलित विमर्श की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

अथवा

स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में भारतीय और पाश्चात्य अवधारणाओं को स्पष्ट कीजिए। 15

2. किन्हीं तीन अंशों की व्याख्या कीजिए: 10×3=30

(क) 'यह खोह-कन्दरा या अंध-कूप नहीं, जिसका दूसरा छोर होता नहीं हो। सुरंग का दूसरा छोर होता ही है। चाहे वह कितनी भी टेढ़ी-मेढ़ी और लम्बी क्यों न हो। जैसे कोई रात कितनी भी डरावनी, अंधेरी और लम्बी लगने वाली हो, अंततः उसका सवेरा तो होगा ही। कम से कम इस सुरंग में तुम्हें झाड़ झंखाड़ों, कांटे कंकड़ों, ठोकर लग सकने वाले

पत्थरों और ऊबड़-खाबड़पन का तो अहसास नहीं हो रहा है। बस, आजू-बाजू की टक्करों को हिम्मत से बर्दाश्त करते रहे। जब चल ही दिए हो तो यह सुरंग कहीं न कहीं तो तुम्हें पहुँचायेगी ही। और वही तुम्हारा गंतव्य व भवितव्य होगा। उस बिन्दु पर तुम्हें क्या करना है यह वक्त आने पर सोचना'— गोविंद गुरू के भीतर की चेतना ने उनके प्रश्नों की गुत्थी को सुलझाने का प्रयास किया।

अथवा

"मतलबपरस्त है, खुदगर्ज़ है, नासमझ है, पढ़े-लिखे जाहिल हैं। औरत से हर शक्ल में सुख हासिल करना चाहते हैं, मगर बदले में देने वाला दिल नहीं रखते। पढ़ी-लिखी लड़कियों से डरते हैं। मैं तो कहता हूँ, कानून और औरतों की मदद इन दोगले मौलवियों और कनूनदां के जरिए नहीं होगी। औरत को खुद हदीस और कानून समझकर अपनी लड़ाई लड़नी पड़ेगी ... मेरे ऐसे खयालात हैं। इसलिए सरकार हो या आम आदमी, मुझसे कतराता है ... किसी सलाह-मशवरे के वक्त जाहिलों की फौज हर समाचार-पत्र में तस्वीर के संग छपी नजर आती है। नॉन-इशू को इशू बनाकर लोग लुत्फ लेते हैं।

(ख) तुम अपनी खातिर स्वतन्त्रता को समझ रहे हो अवश्य
लाजिम।

मगर करोड़ों ही आदि हिन्दू गुलामी से क्या जड़े रहेंगे?

जो चाहते हो कि शक्तिशाली हो एक दुनिया का देश
भारत।

तो रोटी-बेटी से फिर 'हरिहर' कहो तो कब तक फिरे
रहेंगे?

अथवा

मन मेरे ! अब रेखा लांघो
आए तो आए
वह वन्य
छद्मधारी
अविचारी
काल खंडित कलंकित
ले जाए तो ले जाए मंदिर में ज्योतित
उजाले का प्राण करती
कंपित निर्धूम शिखा सी
यह अनिमेष लगन
कौन वहाँ आतुर है
किसे यहाँ देनी है
ऊँचा ललाट रखने को
अग्नि की परीक्षा वह

(ग) मतदान बंद होने के बाद मैं अपने पिता तथा माँ के साथ वापस घर आ रहा था, तो पिता जी ने मुझे बताया कि बाबा हरिहर दास ने उन्हें दो रुपया दिया, इसलिए उन्होंने 'रामराज' को वोट दे दिया। 'रामराज' का मतलब स्वामी करपात्री जी की 'रामराज्य परिषद' नामक पार्टी से था। यद्यपि मुझे राजनीति का कोई ज्ञान नहीं था किन्तु मेरा स्वाभाविक झुकाव कम्युनिस्ट पार्टी की तरफ था। विशेष तौर पर 'ललका झंडा मोटका डंडा' वाले अमिट प्रभाव के चलते, मुझे पिता जी के दो रुपए वाले प्रकरण से बहुत ग्लानि हुई, लेकिन उनसे कुछ कह नहीं पाया।

अथवा

एक बार मैं फिर सड़क के दूसरी ओर देखती हूँ। वहाँ खरीदारी का शोर है। सूरज खो गया शहर के उफनते फेनिल शोर-शराबे में और शाम— न्यूयॉर्क की शाम अभी तक पूरी तरह डूबी नहीं है। मैं स्तम्भित-सी अचानक सड़क पर नीले और लाल रंगों का छिड़काव देखने लगती हूँ। गोधूलि वेला और लाल बत्ती के जलते ही तेज़ रफ्तार से दौड़ती हुई गाड़ियों का रुकना और फिर थोड़ा दम लेकर अजाने निकलती हुई साँसों के साथ हवाओं का आँचल पकड़ क्षितिज की ओर दौड़ जाना, मुझे और अकेला कर जाता है। मेरे भीतर एक आदिम वेदना सिसक उठती है। आखिर इतना भी क्या गुस्सा कि यों बीच बाजार में मुझे अकेला छोड़ डॉक्टर साहब चले गए। मैं वापस होटल भी नहीं लौट सकती, सारे पैसे तो उनके पास जो थे।

3. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए:

(क) 'धूणी तपे तीर' आदिवासी शहादत की घटना पर केन्द्रित उपन्यास है। इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

(ख) मुर्दहिया और दलित चेतना

(ग) पितृसत्ता

(घ) 'कितनी व्यथा' की मूल संवेदना

(ङ) 'सलाम' कहानी में अभिव्यक्त समाज

(च) संथाल क्रांति **अथवा** पलामू विद्रोह। 10×3=30